ओ३म्

संस्कृतशिक्षा

[प्रथम भाग]

वर्णोच्चारण

आचार्य विद्यानन्द विदेह

तीन आना

दो शब्द

इसके अध्ययन से संस्कृत और वेदों का उच्चारण सर्वथा शुद्ध होजायेगा।

इस भाग का सुष्ठु पचन होने पर ही अगला भाग समझ में आसकेगा।

वेदसंस्थान, अजमेर,
माघ शु० ५, २००६ वि०

—विदेह

प्रथम संस्करण [२००९ वि०]........१०००

प्रकाशक
अभयदेव
व्यवस्थापक,
वेदसंस्थान, अजमेर

मुद्रक
विश्वदेव शर्मा
आदित्य मुद्रणालय,
अजमेर

धन्यवाद

वेदसंस्थान के तीन उद्देश्य हैं—(१) वेद को विश्वधर्म बनाना, (२) संस्कृत को विश्वभाषा बनाना और (३) सार्वभौम आर्यसाम्राज्य की स्थापना करना। प्रभु का धन्यवाद है कि साधनहीन होने पर भी वेदसंस्थान अपने जन्म [वसन्त पञ्चमी २००४ वि०] से अब तक तीनों ही दिशाओं में 'सविता' 'साहित्य' तथा 'प्रचार' द्वारा ठोस साधना करने में पर्याप्त सफल हुआ है।

प्रस्तुत प्रकाशन संस्कृतप्रसार की ओर सुस्थिर प्रथम पग है। 'संस्कृतशिक्षा' का क्रम निम्न प्रकार होगा—

प्रथम भाग............वर्णोच्चारण
द्वितीय भाग............सन्धि
तृतीय से द्वादश भाग............अनुवाद और अभ्यास [Direct Method] द्वारा संस्कृत का पूर्ण अध्ययन।

वर्णोच्चारण तथा सन्धि वैदिक और लौकिक संस्कृत की आधारशिला हैं। इन दो विषयों का सुचारु अध्ययन होजाने पर वेदवाणी और देववाणी का अध्ययन नितान्त सरल होजाता है। आधार जितना सुदृढ़ होता है, उसपर निर्मित भवन उतना ही ऊंचा होता है।
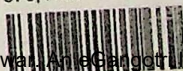
संस्कृत सीखने में आपको जितना भी श्रम करना है वह **संस्कृतशिक्षा** के प्रथम और द्वितीय भाग के अध्ययन में ही करना है। आगामी भागों को तो आप सहज में ही पढ़ और समझ लेंगे।

प्रथम [वर्णोच्चारण] तथा द्वितीय [सन्धि) भागों का क्रम भी अधिक श्रमसाध्य नहीं है, केवल कुछ विशेष मनोयोग से पढ़ने की आवश्यकता होगी। द्वितीय भाग का क्रम वर्णानुक्रमानुसार [Alphabetical order] होने से कोशवत् सन्धिनियमों का उपयोग करते हुए ही सब नियम सुधीत हो जायेंगे।

संस्कृतशिक्षा के बारह भागों के अध्ययनार्थ नित्य केवल आधा घण्टा देने से आप वैदिक तथा लौकिक संस्कृत में पूर्ण पारङ्गत होजायेंगे।

—विदेह

१. अक्षरविज्ञान

जिसका कभी नाश न हो उसे अक्षर कहते हैं। अक्षर=अ+क्षर=न+नाश=अक्षर। किसी भी अक्षर का कभी नाश नहीं होता। अतः प्रत्येक स्वर तथा व्यञ्जन को अक्षर कहते हैं। अक्षरों के संयोग से शब्द बनते हैं। क्योंकि अक्षर नाशरहित हैं, अतः शब्द भी नाशरहित हैं।

आकाश में वायु के संचरण से जो अभिसरण होते हैं, उनसे स्वर स्वरित होते हैं। आकाशस्थ परमाणुओं अथवा पदार्थों से वायु के स्पर्श से जो ध्वनियां ध्वनित होती हैं, उनसे व्यञ्जनों, वि-अञ्जनों, विविध-अभिव्यक्तियों, का अभि-व्यञ्जन, परि-ध्वनन, प्रादुर्भाव, होता है। स्वरों और व्यञ्जनों की आकाश में सदा सर्वत्र अभिव्याप्ति और अभिव्यक्ति होती है।

अक्षरसमूह का दूसरा नाम 'वर्ण' है। वर्ण का अर्थ है वर्ग, रंग, रूप। समस्त अक्षरसमूह दो वर्गों में वर्गित [विभक्त], दो रूपों में रूपित अथवा दो रंगों में रंगित है–(१) स्वर, (२) व्यञ्जन।

जिन अक्षरों का स्वरण [उच्चारण], अन्तःकरण से प्राणरूप में प्रेरित और फेफड़ों से अनुस्फुटित होकर, कण्ठ में झंकारता हुआ तथा मुखावरोध [मुख-अवरोध] से सर्वथा मुक्त रहता हुआ, नासिका द्वारा अभिव्यक्त होता है, उन्हें स्वर कहते हैं। प्रत्येक स्वर स्वस्वरण [स्वोच्चारण] में सर्वथा स्वतन्त्र है। प्रत्येक स्वर अन्य किसी भी स्वर या व्यञ्जन के स्पर्श या

सम्पर्क के बिना स्वतन्त्र रूप से सुस्वरित [सु-उच्चारित] होता है। स्वस्वरण में नितान्त स्वतन्त्र होने से भी स्वरों को स्वर [स्वतन्त्र] कहते हैं। स्वर के अनेक अर्थों में से एक अर्थ स्वतन्त्र भी है।

जो ध्वनियां पूर्णतया व्यञ्ज अथवा व्यक्त होती हैं, उन्हें व्यञ्जन कहते हैं।

स्वरों का उच्चारण स्वर के रूप में होता है। व्यञ्जनों का उच्चारण स्पष्ट-ध्वनि के रूप में होता है। प्रत्येक उच्चारण स्वर और ध्वनि के रूप में अथवा स्वर और व्यञ्जन के रंग में रंगा हुआ होता है, इसीलिये अक्षरों को वर्ण भी कहते हैं।

स्वर स्वतन्त्र अथवा स्वयंस्वरित होते हैं। परन्तु कोई भी व्यञ्जन किसी एक स्वर की सहायता के बिना व्यक्त नहीं होता। व्यञ्जन के स्पष्ट उच्चारण के लिये व्यञ्जन के पहले या पीछे किसी एक स्वर की अपेक्षा होती है। मुखाकाश में वायु के संचरण मात्र से स्वरों का स्वरण होता है। व्यञ्जनों के उच्चारण के लिये मुखाकाश में वायु और जिह्वा को परस्पर विविधतया घात, आघात, प्रत्याघात, व्याघात, करना पड़ता है।

२. अक्षर–वर्ण

(१) अक्षर या वर्ण दो विभागों में विभक्त हैं—स्वर और व्यञ्जन।

(२) स्वर तीन प्रकार के होते हैं—ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

(३) स्वर १३ हैं—

ह्रस्व	दीर्घ	प्लुत
अ	आ	अ ३
इ	ई	इ ३
उ	ऊ	उ ३
ऋ	ॠ	ऋ ३
ऌ		ऌ ३
	ए	ए ३
	ऐ	ऐ ३
	ओ	ओ ३
	औ	औ ३
५	८	

१३

[१] ह्रस्व और दीर्घ स्वरों को पृथक् पृथक् कण्ठाग्र कर लीजिये। केवल पांच ह्रस्व स्वरों को स्मरण रखना पर्याप्त होगा। शेष आठों स्वर दीर्घ हैं।

[२] जब किसी स्वर को अतिशय दीर्घ बोलते या गाते हैं, तो उस स्वर की 'प्लुत' अवस्था होती है।

[३] प्लुत के आगे प्राय: '३' लिख देते हैं। न भी लिखें तो कोई अशुद्धि नहीं मानी जाती।

(४) ं अनुस्वार।
: विसर्ग।

अनुस्वार या विसर्ग से पूर्व कोई एक स्वर अवश्य होता है।

(५) व्यञ्जन ३३ हैं—

विवार	संवार	वर्ग	
क् ख्	ग् घ् ङ्	कवर्ग	वर्गीय वर्ण = २५
च् छ्	ज् झ् ञ्	चवर्ग	
ट् ठ्	ड् ढ् ण्	टवर्ग	
त् थ्	द् ध् न्	तवर्ग	
प् फ्	ब् भ् म्	पवर्ग	
	य् र् ल् व्		
श् ष् स्	ह्		
१३	२०		
३३			

[१] विवार और संवार व्यञ्जनों को पृथक् पृथक् कण्ठस्थ कर लीजिये। पांचों वर्गीय व्यञ्जनों के प्रथम दो दो व्यञ्जन [५×२=१०] तथा श् ष् स्—१३ व्यञ्जन विवार हैं, शेष २० व्यञ्जन संवार हैं।

[२] व्यञ्जनों को हल् भी कहते हैं।

[३] जो व्यञ्जन [्] इस चिह्न द्वारा नीचे से काट दिया जाता है उसे हल् [स्वररहित व्यञ्जन, मूल व्यञ्जन] कहते हैं।

[४] ऊपर लिखे ३३ व्यञ्जन हल् [स्वररहित मूल व्यञ्जन] हैं।

[५] जो व्यञ्जन [्] इस चिह्न द्वारा नीचे से कटा हुआ नहीं होता, भाषा में उसे पूर्ण व्यञ्जन कहते हैं और उसके अन्त में 'अ' की मात्रा जुड़ी समझी जाती है और उसके अन्त में अ का उच्चारण होता है—

हल् + अ =	पूर्ण व्यञ्जन	हल् + अ =	पूर्ण व्यञ्जन
१. क् + अ =	क	१३. ड् + अ =	ड
२. ख् + अ =	ख	१४. ढ् + अ =	ढ
३. ग् + अ =	ग	१५. ण् + अ =	ण
४. घ् + अ =	घ	१६. त् + अ =	त
५. ङ् + अ =	ङ	१७. थ् + अ =	थ
६. च् + अ =	च	१८. द् + अ =	द
७. छ् + अ =	छ	१९. ध् + अ =	ध
८. ज् + अ =	ज	२०. न् + अ =	न
९. झ् + अ =	झ	२१. प् + अ =	प
१०. ञ् + अ =	ञ	२२. फ् + अ =	फ
११. ट् + अ =	ट	२३. ब् + अ =	ब
१२. ठ् + अ =	ठ	२४. भ् + अ =	भ

हल् + अ = पूर्ण व्यञ्जन		हल् + अ = पूर्ण व्यञ्जन	
२५. म् + अ =	म	३०. श् + अ =	श
२६. य् + अ =	य	३१. ष् + अ =	ष
२७. र् + अ =	र	३२. स् + अ =	स
२८. ल् + अ =	ल	३३. ह् + अ =	ह
२९. व् + अ =	व		

(६) किसी भी व्यञ्जन पर स्वर मात्रारूप में चढ़ता है—

स्वर	मात्रा	उदाहरण
अ		क् + अ = क
आ	ा	क् + आ = का
इ	ि	क् + इ = कि
ई	ी	क् + ई = की
उ	ु	क् + उ = कु
ऊ	ू	क् + ऊ = कू
ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ
ॠ	ॄ	क् + ॠ = कॄ
ऌ	ॢ	क् + ऌ = कॢ
ए	े	क् + ए = के
ऐ	ै	क् + ऐ = कै
ओ	ो	क् + ओ = को
औ	ौ	क् + औ = कौ

(७) मात्रायुक्त व्यञ्जन से मात्रा पृथक् करने पर हल [स्वररहित मूल व्यञ्जन] शेष रहता है—

क से अ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
का से आ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कि से इ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
की से ई की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कु से उ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कू से ऊ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कृ से ऋ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कॄ से ॠ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
क्लृ से लृ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
के से ए की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कै से ऐ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
को से ओ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।
कौ से औ की मात्रा पृथक् करने पर क् शेष रहेगा।

(८) ऋग्वेद में ड् को ळ् लिखते हैं।

३. उच्चारण-स्थान

वर्ण	उच्चारणस्थान
अ, आ, ह्	कण्ठ
क्, ख्, ग्, घ्	जिह्वामूल
इ, ई, च्, छ्, ज्, झ्, य्, श्	तालु
ऋ, ॠ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, र्, ष्	मूर्द्धा
ऌ, त्, थ्, द्, ध्, ल्, स्	दन्त
उ, ऊ, प्, फ्, ब्, भ्	ओष्ठ
ए, ऐ	कण्ठ तथा तालु
ओ, औ	कण्ठ तथा ओष्ठ
व्	दन्त तथा ओष्ठ
ङ्	जिह्वामूल तथा नासिका
ञ्	तालु तथा नासिका
ण्	मूर्द्धा तथा नासिका
न्	दन्त तथा नासिका
म्	ओष्ठ तथा नासिका
ं [अनुस्वार]	नासिका
: [विसर्ग]	स्वरानुसार। जिस स्वर के आगे विसर्ग पढ़ा जाये, उसी स्वर का उच्चारणस्थान विसर्ग का उच्चारणस्थान होता है।

४. उच्चारण

देववाणी की वर्णमाला इतनी सरल, स्वाभाविक और प्राकृत है कि उसके उच्चारण में तनिक भी कठिनाई न होनी चाहिये। अनभ्यास के कारण जिन अक्षरों के उच्चारण में प्रायः अशुद्धियां होती हैं, उनका शुद्धोच्चारण नीचे दर्शाया जाता है।

(१) अ

अ का उच्चारण अधिकांश जन प्रायः ऐं जैसा करते हैं, जो सर्वथा अशुद्ध है। अ के शुद्धोच्चारण के लिये यह स्मरण रखना चाहिये कि प्रत्येक पूर्ण व्यञ्जन के अन्त में अ युक्त होता है। अतः प्रत्येक पूर्ण व्यञ्जन के अन्त में अ का स्पष्ट उच्चारण होना चाहिये। उदाहरणार्थ 'अजर' शब्द को लीजिये। इस शब्द में तीन अ हैं—अ + ज् + अ + र् + अ। अतः "अजर" के तीनों अकार स्पष्टतः बुलने चाहियें। 'अजर' का प्रथम अक्षर अ है। 'अजर' के प्रथम अ का जैसा उच्चारण है, ठीक वैसा ही उच्चारण 'ज' और 'र' में युक्त अ का कीजिये। अ का याथातथ्य [ठीक ठीक] उच्चारण वही है जो 'अजर', 'अमर', 'अटल' आदि शब्दों के आदिम [सर्वप्रथम] अ का है।

(२) ऋग्वेद में ड् को ळ् लिखते हैं। ड् को ळ् लिखना केवल ऋग्वेदीय परिपाटी है। ळ् का शुद्धोच्चारण ठीक वही

है जो ड् का है। ड् या ळ् एक ही अक्षर है। या यों कहिये कि एक ही अक्षर दो प्रकार से लिखा जाता है। कतिपय अन्य अक्षर भी दो प्रकार से लिखे जाते हैं, यथा—

अ या ऋ

आ या ऋा

ण् या ए्

(३) संयुक्ताक्षर क्ष् तथा ज्ञ् का शुद्धोच्चारण निम्न प्रकार है—

क्ष्=क्+ष् [क्ष्], यथा—वृक्ष, वक्ष, राक्षस।

ज्ञ्=ज्+ञ् [ज्ञ्], यथा—ज्ञान, यज्ञ, आज्ञा।

ज्ञ् [ज्ञ्] को ग्य् बोलना सर्वथा अशुद्ध है।

(४) कुछ अक्षरों का उच्चारण निम्न तालिका में दर्शाया गया है—

अक्षर	अशुद्धोच्चारण	शुद्धोच्चारण	उदाहरण
ऋ	रि, रिर्, रु	र्	संस्कृत, उद्धृत
ॠ	री, रिरी, रू	र्ँ	कर्तृन्, स्वसॄः
ऌ	लिर्, लुर्	लर्ँ	होत्लृकार
ङ्	अंगै	गँ	गङ्गा
ण्	अणै	ड़ँ	प्राण
श्	ष्, स्	श्	शान्ति, शोभा, शुद्ध
ष्	ख्, स्	हल्का ह्रस्व श्	स्पष्ट, इष्ट
स्	श्, ष्	स्	सेवा, सदा

(५) 'स्थान' को 'अस्थान' या 'इस्थान' बोलना नितान्त अशुद्ध है। एवमेव 'स्कूल' को 'इस्कूल', 'स्थिति' को 'इस्थिति'

उच्चारता जड़ता का लक्षण है। कोई कोई 'वरेण्यम्' को 'वरेणियम्' पढ़ते हैं, यह भी अयुक्त है। स्मरण रहे कि देववाणी की वर्णमाला की यही विशेषता है कि जो लिखा जाये वही पढ़ा जाये। इस नियम के विपरीत उच्चारण सर्वथा अशुद्ध है।

(६) · [अनुस्वार] चार प्रकार से लिखा जाता है—

· ँ ॐ ँ

(७) · अनुस्वार कहाता है और नासिका में बोला जाता है।

ँ अनुनासिक कहाता है और मुखनासिका में बोला जाता है।

ॐ का प्रयोग केवल यजुर्वेद में है। यजुर्वेद में यह ह्रस्व ग्वङ् पढ़ा जाता है और मुख तथा नासिका में बोला जाता है।

ँ का प्रयोग भी केवल यजुर्वेद में है। यजुर्वेद में यह दीर्घ ग्वङ् पढ़ा जाता है और मुख तथा नासिका में बोला जाता है।

(८) अनुस्वार—

[१] पद के मध्य में वर्गीय व्यञ्जन परे होने पर अनुस्वार उसी व्यञ्जन के वर्ग का पांचवां बोला जाता है—

लेखन	उच्चारण
गंगा	गङ्गा
व्यंजन	व्यञ्जन

लेखन	उच्चारण
मंडल	मण्डल
तंतु	तन्तु
शंभु	शम्भु

[२] ं अनुस्वार पदके अन्त में म् बोला जाता है, चाहे कोई भी स्वर या व्यञ्जन परे हो—

लेखन	उच्चारण
कथं वदसि	कथम् वदसि
अहं आगच्छामि	अहम् आगच्छामि
किं करोमि	किम् करोमि

[३] ं अनुस्वार पद के मध्य में य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् परे होने पर अनुनासिक [मुखनासिका में] बोला जाता है—संयम, संवत्, प्रशंसा, रंह ।

[४] य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् से पूर्व ं अनुस्वार के स्थान में ँ अनुनासिक भी लिख सकते हैं—सँयम, सँवत्, प्रशँसा, रँह ।

[५] वेद में पदान्त न् को ँ [अनुनासिक] भी लिखा और पढ़ा जाता है, यदि स्वर परे हो—

लोक में	वेद में
आदित्यान् अनु	आदित्याँ अनु
स्तुवान् आ	स्तुवाँ आ

[६] यजुर्वेद में ं [अनुस्वार] या ँ [अनुनासिक] का उच्चारण ॐ ह्रस्व ग्वङ् होता है, यदि ं [अनुस्वार] या

ँ [अनुनासिक] से पूर्व दीर्घ स्वर हो और परे र्, श्, ष्, स् या ह् हो—

लोक में तथा अन्य वेदों में	यजुर्वेद में
पृथिव्यां शतेन	पृथिव्या ꣳ शतेन
मांसम् या माँसम्	मा ꣳ सम्
हवींषि या हवीँषि	हवी ꣳ षि

[७] यजुर्वेद में ं [अनुस्वार] या ँ [अनुनासिक] का उच्चारण ꣳ दीर्घ ग्वङ् होता है, यदि ं [अनुस्वार] या ँ [अनुनासिक] से पूर्व ह्रस्व स्वर हो और परे र्, श्, ष्, स् या ह् हो—

लोक में तथा अन्य वेदों में	यजुर्वेद में
संसृज्य या सँसृज्य	स ꣴ सृज्य
दृंह या दृँह	दृ ꣴ ह
अवधूतं रक्ष	अवधूत ꣴ रक्ष
वयं हि	वय ꣴ हि

[८] ꣳ को ह्रस्व ग्वङ् तथा ꣴ को दीर्घ ग्वङ् पढ़ना यजुर्वेदपाठियों की परिपाटी है, जो सर्वथा अशुद्ध है। इनका शुद्ध लेखन तथा उच्चारण इसी पाठ के नियम (८) [१] [२] [३] [४] के अनुसार होना चाहिये। यजुर्वेदपाठियों ने अन्य भी अनेक अशुद्ध परिपाटियां प्रचलित कर रक्खी हैं, यथा य् को ज् पढ़ना, ष् को ख् पढ़ना, इनका भी निराकरण तथा परिष्कार करना योग्य है।

(९) विसर्ग के तीन भेद हैं—विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय।

[१] [:] यह विसर्ग है। इसका उच्चारण ह्रस्व [हल्का] ह् जैसा होता है—रामः, रविः।

[२] ᳵ—इसका उच्चारण सर्वथा विसर्ग जैसा ही होता है। इसका प्रयोग केवल क्वर्ग [क्, ख्, ग्, घ्, ङ्] तथा प्वर्ग [प्, फ्, ब्, भ्, म्] से पूर्व होता है। क्वर्ग से पूर्व प्रयुक्त होने पर इसे जिह्वामूलीय कहते हैं और प्वर्ग से पूर्व प्रयुक्त होने पर इसे उपध्मानीय कहते हैं।

[३] ᳶ का प्रयोग सर्वथा लुप्त होगया है। अब सर्वत्र : विसर्ग का ही प्रयोग होता है।

दिव्य स्वप्न

दिव्य-स्वप्न-द्रष्टा देव दयानन्द के तीन दिव्य स्वप्न थे—

(१) वेद को विश्वधर्म बनाना ।
(२) संस्कृत को विश्वभाषा बनाना ।
(३) विश्व में सार्वभौम आर्य साम्राज्य की स्थापना करना ।

क्या आप इनकी सार्थक सिद्धि के लिये कुछ करना चाहते हैं ? यदि हां, तो "वेदसंस्थान की नियमावली" तथा "वेदसंस्थान का परिचय" निःशुल्क मंगाकर अवलोकन कीजिये और अपने कर्तव्य का निश्चय कीजिये ।

व्यवस्थापक,
वेदसंस्थान, अजमेर

सविता

—: वेदविषयक सर्वोत्तम मासिक पत्र :—

सम्पादक—आचार्य विदेह

—वेदमन्त्रों की मौलिक जीवनप्रद व्याख्या—
—वैदिक संस्कृति तथा वेदाध्ययन का सर्वोत्कृष्ट साधन—
—राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का वेदानुकूल समाधान—

वार्षिक मूल्य—३) रु० । वी.पी.पी. द्वारा ३।।) रु० ।
नमूना निःशुल्क ।

व्यवस्थापक,
मासिक "सविता", अजमेर

वेदसंस्थान, अजमेर

का

आचार्य विदेह द्वारा विरचित

★ पठनीय साहित्य ★

★गायत्री [द्वितीय संस्करण]	....	....	१॥)
★सार्वभौम आर्यसाम्राज्य	....	....	॥)
★वैदिक योगपद्धति	....	....	।=)
★वैदिक बालशिक्षा, प्रथम भाग [द्वितीय संस्करण]....			।=)
★वैदिक बालशिक्षा, द्वितीय भाग	....	....	।=)
★आर्यसमाज का साप्ताहिक अधिवेशन [तृतीय संस्करण]....			≡)
★विदेह गीताञ्जलि	....	....	१।)
★विदेह अलाप	....	....	।)
★यज्ञोपवीत रहस्य	....	....	–)
★संस्कृतशिक्षा, प्रथम भाग, वर्णोच्चारण		....	≡)
★संस्कृतशिक्षा, द्वितीय भाग, सन्धि		....	।=)